डॉ. पारुल सिंह
आचार्या
श्री कृष्ण प्रणामी आर्ट्स कॉलेज,
दाहोद (गुजरात)
मो. न. ९४२८६७३१०९

आदिवासी हस्तकला और हाट बाजार का अर्थतंत्र पर प्रभाव

प्राचीनकाल से घने जंगल, विरान क्षेत्र या एकांत क्षेत्र में रहने वाले लोगों को आदिवासी के रूप में पहचाना जाता है। भारत में आदिवासियों को मुख्य धारा में लाने के लिए सरकार ने उन्हें अनुसूचित जनजाति के रूप में स्वीकारा है। अत्यंत घने जंगलों में रहने के कारण उनमें साक्षरता का प्रमाण बहुत कम देखा जाता है। वर्तमान समय में भी अनेक आदिवासी जंगल विस्तार में रहने के कारण निरक्षर हैं। गुजरात राज्य के आदिवासी उनके अधिक परिश्रमी होने के कारण पहचाने जाते हैं। वे भारतीय समाज व्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण अंग है । यह समुदाय विशिष्ट प्रकार की आर्थिक जीवन शैली रखता है। उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थिति वैविध्यपूर्ण और विशिष्ट है।

आदिवासी क्षेत्रों में अलग-अलग जगहों पर हाट बाजार लगता है जिसे हाट या गुजरी भी कहा जाता है। यह बाजार ग्राम्य स्तर पर ग्राम्य बस्ती को हाट के लिए प्रोत्साहन देता है। खेती की पेदाशों, सब्जी, गृहणियों द्वारा हाथ से बनाई हुई कला कृति की वस्तुओं की खरीदी-बिक्री के लिए यह बाजार खड़ा किया गया है। गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में ऐसे लगभग 182 साप्ताहिक हाट लगते हैं। प्रत्येक तहसील में ऐसा एक निश्चित दिन होता है जिसमें आदिवासी मुखिया तय करते हैं कि किस दिन हाट लगाया जाएगा। यहाँ स्थानिक रूप से पैदा होने वाली खेती की पेदाशों, सब्जी, मीर्च-मसाला, जंगल की पेदाश, जंगली फल-फलादी, पालतू पशु-पक्षियों, मुर्गी, मछली आदि की बिक्री कम दाम में होती देखी जा सकती है, जो दूसरे बाजार की तुलना में बहुत सस्ती होती है। जिसके कारण आदिवासी क्षेत्र में रहने वाले आदिवासी अपनी गरीब परिस्थिति के कारण यहाँ से ही चीज वस्तुओं को बेचते-खरीदते हैं। दुकान, पक्के मकान बनना उनके लिए मुश्किल है। जिसके कारण बिक्री व्यवस्था स्वयं जमाते हैं। इन क्षेत्रों में हाट बाजार की बहुत मांग देखी जाती है। इससे स्थानिक लोगों को गांव में ही सभी सामान मिल जाए और बाहर जाकर खर्च न करना पड़े। इससे हाट बाजार का महत्व बहुत ही बढ़ गया है।

गुजरात की पूर्वी पट्टी पर आदिवासी क्षेत्र आया हुआ है, जिसमें दाहोद जिले का समावेश होता है। इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में आदिवासी समाज के लोग रहते हैं। दाहोद जिले में ९० प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी लोगों की है। वर्तमान समय में 'मोल, मल्टी प्लेक्स होने के बावजूद भी अनेक स्थानों पर हाट जैसा आनंद नहीं देखा जाता, इसलिए आदिवासी क्षेत्रों में हाट बाजार बहुत ही उपयोगी और अर्थतंत्र की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण कहा जा सकता है।

अर्थतंत्र की दृष्टि से देखें तो हाट बाजार के कारण उन क्षेत्रों में अच्छा विकास देखा जा सकता है। इन क्षेत्रों में रहने वाले नज़दीक के गांव के लोगों की खरीदी-बिक्री के कारण उत्पादन की मांग पर भी अच्छा प्रभाव देखा जा सकता है। हाट बाजार के कारण बेरोजगारों को रोजगारी मिल जाती है। आज के आधुनिक युग में आदिवासी क्षेत्र में रहने वाले लोग मोल में जाने की जगह इस हाट बाज़ार से सभी वस्तुएँ खरीदना पसंद करते हैं। कई बार इस हाट बाजार का लगभग 60 प्रतिशत जितना माल

सामान विदेशों में भी आयात-निर्यात होता देखा जाता है। इसका कारण है हाट बाजार में हस्त कला की अनेक वस्तुएँ बेची जाती हैं और वह भी बहुत ही कम दामों में मिल जाती हैं।

आदिवासी लोग अपने नज़दीक लगने वाले इस हाट बाजार में अपने हाथों से बनाई हुई वस्तुएँ, खेती की उपज, धातु के बर्तन, मिट्टी के बर्तन, मीर्च-मसाला, सब्जी, लोहे के हथियार, अगरबत्ती तीर-कमान, जंगल के वृक्षों की छाल की रस्सी और चारपाई बनाने की रस्सी, बांस से बनती वस्तुएँ टोकरा, टोकरी, पंखा, सूप, अनाज भरने की बडी कोठी आदि दैनिक जीवन में उपयोग में ली जाने वाली सभी वस्तुएँ उपलब्ध हो जाती हैं। दाहोद एन. जी. ओ. में इन आदिवासी सामाज के कारीगरों द्वारा ब्लाक प्रिंटिंग, बीड बर्क, मनका कढाई आदि हस्तकलाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है। हस्तकला का यह कार्य किस प्रकार किया जाता है साथ ही इस कला से रोज़गार मिलना कैसे संभव है ?

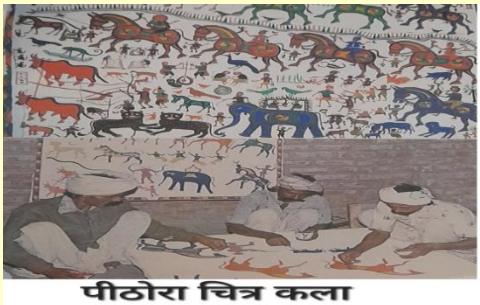

पीठोरा चित्र कला

बांस कला

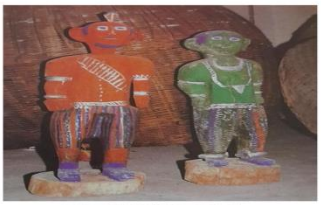

काष्ठ कला

काष्ठ कला

घास से बनाया मोर, मोती के गहने, मिट्टी का खिलौना

मोती कला

मिट्टी की मूर्ति

आदिवासियों द्वारा बनाई गई इन वस्तुओं से उनकी रोजी-रोटी तो अवश्य चलती है किन्तु उन्हें अपने परिश्रम का उचित महेनताना नहीं मिलता, जिससे आज भी वे आर्थिक रूप से कमजोर ही हैं। आर्थिक कमजोरी ही उनकी अशिक्षा का एक बहुत बड़ा कारण भी है। हालांकि कुछ एन. जी. ओ. दाहोद जिले में आदिवासियों द्वारा बनाई गई वस्तुओं को प्रोत्साहन भी दे रहे हैं और उन्हें रोजगार भी दे रहे हैं। वे आदिवासियों को प्रशिक्षित भी करते हैं। साथ ही उनके द्वारा बनाई हुई वस्तु जैसे ब्लॉक-प्रिंटिंग, वुडब्लॉक प्रिंटिंग, ग्लास बीड्स से बनी वस्तुएँ, मनका कढ़ाई, बाँस के, बेंत के फर्नीचर आदि कई तरह की चीजों को बनवाते हैं और बाज़ार में उसे बेचते भी हैं। इसके लिए वे प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन करते हैं, जिसमें विभिन्न हस्त कला कृतियों का उत्पादन करने वाले लगभग 2000-2500 कारीगरों को एकत्रित करते हैं। नौसिखियों को प्रशिक्षण देकर एवं उनकी विशेषता बढ़ाने में मदद करने के लिए कौशल उन्नयन, डिसाइन कार्यशालाएँ, बैंक लिंकेज और जगरुकता कार्यक्रम प्रदान करता है।

गाँव के कारीगरों को पार्ट टाइम काम करते हुए भी जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उसे ध्यान में रखते हुए, सामान्य समूहों में कारीगरों के लिए 'सामान्य सुविधा केन्द्रों' (सी.एफ.सी.) में एक साथ काम करना आसान बना दिया जाता है। इस केन्द्र में किसी विशेष कला पर काम करने वाले कारीगर एक साथ आते हैं और काम करते हैं। इसके लिए उच्च गुणवत्ता वाले कलाकृति के उत्पादन में एक-दूसरे की विशेषता का लाभ उठाना आसान हो जाता है।

ब्लॉक प्रिंटिंग लकड़ी के ब्लॉक का उपयोग करके कपास, रेशम या लिनन पर पैटर्न को प्रिंट करने की प्रक्रिया है। कपड़े पर लकड़ी के ब्लॉक उकेरे जाते हैं। यह टेक्सटाइल प्रिंटिंग उर्फ ब्लॉक प्रिंटिंग की सभी विधियों में सबसे शुरुआती और धीमी है। ब्लॉक प्रिंटिंग हाथ से की जाने वाली बहुत धीमी प्रक्रिया है। हालाँकि, यह अत्यधिक कलात्मक है| ब्लॉक प्रिंटिंग एक

बहुत पुरानी और विरासती पद्धति है। ऐसा कहा जाता है कि यह एशिया और दुनिया भर में आने से पहले 4000 साल पहले मूल रूप से चीन से आया था। यह प्रक्रिया पेंटिंग, रंगाई या बुनाई के समान ही है। सतह पर छाप बनाने के लिए लकड़ी को काटा या तराशा जाता है। भारत में, राजस्थान में बगरू जिले के पुराने चिप्पा समुदाय द्वारा ब्लॉक प्रिंटिंग की शुरुआत की गई थी। ब्लॉक प्रिंटिंग में कई तरीके हैं जो बगरू प्रिंटिंग, सांगानेरी प्रिंटिंग, कलमकारी ब्लॉक प्रिंटिंग, अजरख प्रिंटिंग और डब्बू प्रिंटिंग जैसी पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। यह राज्य देवी-देवताओं, मनुष्यों, पशु-पक्षियों की रंगीन छपाई के लिए जाना जाता है|

गुजरात में पैठपुर परिवार द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी ब्लॉक प्रिंटिंग किया करते थे, व्यापारी या सोडागिरी प्रिंट गुजरात में होती थी। गुजरात का कच्छ जिला न केवल कच्छ बल्कि पूर्वी गुजरात में भी एक ऐसी जगह थी, और अब भी है, जहां ब्लॉक प्रिंटिंग फलती- फूलती है। कहा जाता है कि अजरक प्रिंट की उत्पत्ति इसी क्षेत्र से हुई है। अजरक गहरे नीले-रंगे या काले-रंगे कपड़े पर चमकीले रंग जैसे लाल या पीले रंग को शामिल करता है। अजरक प्रिंट को उनके विस्तृत ज्यामितीय पैटर्न से पहचाना जा सकता है।

ISSN : 2583-2948

बांस की हस्त कला

ऐन. जी. ओ .हस्त कला

ऐन. जी. ओ .हस्त कला

मोती की हस्त कला

दाहोद जिले में सहज एन. जी. ओ. ने सालों पहले ब्लॉक प्रिंटिंग शुरू की, यहाँ कपड़े पर ब्लॉक प्रिंटिंग कला बडी आकर्षक है। सहज अपने खुद के ब्लॉक बनाता है और उत्पादों को डिजाइन करने के लिए उनका इस्तेमाल करता है। हालाँकि, ब्लॉक प्रिंटिंग प्रक्रिया कपड़े पर ब्लॉक दबाने से छप जाती है। लकड़ी के प्रत्येक ब्लॉक को तराशने से लेकर कपड़े तैयार करने, रंगों को मिलाने और अंतिम रूप देने तक कई चरण शामिल हैं। प्रत्येक ब्लॉक प्रिंटिंग तकनीक में कलात्मकता, कौशल और धैर्य की आवश्यकता होती है। यह इन कार्यों का योग है जो हमारे भव्य ब्लॉक प्रिंटेड कपड़ों का उत्पादन करते हैं। सहज की ब्लॉक

प्रिंटिंग पूर्वी गुजरात में अग्रणी हैं जिन्होंने आदिवासी कारीगरों के साथ ब्लॉक प्रिंट कला बनाई। सहज में पिथौरा रूपांकनों और अन्य डिजाइनों पर विशेष ब्लॉक तैयार किए हैं। यह एन. जी. ओ. सुनिश्चित करते हैं कि ब्लॉक प्रिंटिंग द्वारा किए गए प्रत्येक उत्पाद/डिजाइन में अत्यधिक सावधानी बरती जाए। आदिवासी कारीगरों द्वारा जीवंत रंगों में साड़ी, बैग, कोस्टर और डैंगलर जैसे उत्पाद बनाते हैं।

ग्लास बीड्स बनाने की कला शायद वेनिस, इटली में उत्पन्न हुई थी। 14वीं शताब्दी के प्रारंभ से मोतियों का उत्पादन शुरू हुआ। वहां से मोतियों के उत्पादन को यूरोप के अन्य भागों में प्रोत्साहित किया गया, जिनमें बोहेमिया, फ्रांस, इंग्लैंड और हॉलैंड सबसे प्रमुख हैं। लेकिन यह कला 19वीं सदी से गुजरात में सुर्खियों में आई और 20वीं सदी तक फलती-फूलती रही।

गुजरात को भारत में बीड क्राफ्ट का केंद्र माना जाता है। यह शिल्प पहली बार जूनागढ़ में बनाया गया था और कई वर्षों तक इसका अभ्यास किया गया था। अब यह सौराष्ट्र क्षेत्र, राजकोट, अमरेली, अहमदाबाद और दाहोद में भी प्रचलित है। कुशल जनजातियाँ मोतियों का उपयोग करके नाजुक और सुंदर वस्तुएँ बनाती हैं और उन्हें एक साथ पिरोती हैं।

बीडवर्क मूल रूप से एक शिल्प है जो मोतियों को एक साथ पिरोकर शो पीस, आभूषण, हैंडबैग, कपड़े और बहुत कुछ जैसे सुंदर और रंगीन टुकड़े बनाकर किया जाता है। पूरे गुजरात में लोकप्रिय रूप से मोती का भरत काम जाना जाता है और यह स्थानीय कारीगरों द्वारा किया जाता है।

गुजरात वास्तव में कपड़ों पर मोतियों की सिलाई की कला में माहिर है इसके लिए कारीगर अत्यधिक श्रम करते हैं ताकि उनके उत्पादन को बढ़ाया जा सके और उन्हें और अधिक सुंदर बनाया जा सके।

बीडवर्क तकनीकों को मोटे तौर पर कई श्रेणियों में विभाजित किया जाता है, जिसमें लूम और ऑफ-लूम वीविंग, स्ट्रिंगिंग, बीड एम्ब्रॉएडरी, बीड क्रोशिया, बीड निटिंग और बीड टेटिंग शामिल हैं।

बीड स्ट्रिंगिंग बीडवर्क का सबसे सीधा प्रकार है। लेकिन यह आसान नहीं है। इसमें किसी भी सामग्री की स्ट्रिंग में किसी भी मोती को जोड़ना शामिल है और एकल, एकाधिक या ब्रेडेड स्ट्रेंड्स बनाता है। इन धागों का उपयोग हार, झुमके, अंगूठियां या कंगन के रूप में किया जा सकता है। आप अपनी रचनात्मकता का उपयोग कर सकते हैं और एक सुंदर आभूषण बना सकते हैं।

ऑफ-लूम बीडवर्क सुई और धागे से किया जाता है और मोतियों की चेन/कपड़े बनाने के लिए बीडिंग टांके लगाए जाते हैं। मनका बुनाई एक बीज मनका (छोटे मोती) है। छोटे मोतियों को सीड बीड्स कहा जाता है जहां यह एक बीज जैसा दिखता है। सीड बीड्स अलग-अलग रेंज के होते हैं, आकार से आकार में भिन्न होते हैं। सीड बीड्स भी क्यूब्स, बिगुल बीड्स और ड्रॉप बीड्स जैसे गोल के बजाय अलग-अलग शेप में आते हैं।

लूम बीडिंग यह एक उपकरण है जिसे मनका करघा कहा जाता है जिसका उपयोग मोतियों को कपड़े की तरह मनके कपड़े में बुनने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग बड़े आकार के बीडेड पैनल या फ्लैट बीडवर्क की स्ट्रिप्स बनाने के लिए किया जाता है जिसका उपयोग पर्स या किसी आर्टवर्क में किया जा सकता है। ऑफ-लूम की तुलना में लूम बीडिंग तेज होती है।

मनका कढ़ाई में मोतियों को कपड़े या कपड़े की सिलाई पर सिल दिया जाता है। बीड एम्ब्रॉयडरी को क्विल्टिंग में इस्तेमाल किया जा सकता है. इसे क्रॉस-सिलाई के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। बीड कढ़ाई कपड़ों और अन्य वस्तुओं को अलंकृत करने के लिए मूल अमेरिकियों द्वारा पसंद की जाने वाली कई बीडवर्क तकनीकों में से एक है। वर्तमान समय में मनके का काम बहुत सी आदिवासी महिलाओं के लिए आजीविका बन गया है और इसने उन्हें एक बेहतर भविष्य दिया है।

मनके का काम बीडवर्क आदिवासी क्षेत्र दाहोद जिले की पहचान है, यहाँ के एन. जी. ओ की पूरी उत्पाद श्रृंखला में विभिन्न तरीकों से मोतियों का उपयोग किया जाता है। इसे हासिल करने में इन्हें सालों लग गए, अपने कारीगरों के कौशल विकास और कौशल उन्नयन में निवेश करना इन्होंने जारी रखा है। एन. जी. ओ लगातार डिजाइन विकास, रंग संयोजन पर काम करता है और सख्त गुणवत्ता मानकों का पालन करता है। इससे कारीगर अपने काम में निपुण हो जाते हैं और इससे सुंदर उत्पाद बनते हैं। इन मनके के काम की न केवल गुजरात में बल्कि दुनिया भर में सराहना की जाती है। दाहोद जिये के आदिवासी कारीगरों द्वारा किया जाने वाला बीडवर्क पूर्वी गुजरात में सबसे अच्छा बीडवर्क माना जाता है।

गुजरात में महिलाओं को गर्व से उच्च सामाजिक स्थिति में लाने के लिए ऐसे एन.जी.ओ. वर्षों से निरंतर प्रयासरत हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अति आवश्यक है कि जो शिक्षा उन्हें संस्थानों में मिल रही है उसके पश्चात् उन्हें रोजगार भी प्राप्त हो। हमारे देश के हर जिले में कुछ-न-कुछ विशेष हस्त, शिल्प कला की वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं, उसी का सदुपयोग यदि

किया जाए, प्रशिक्षित कारीगरों की सहायता से यदि विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया जाय तो आदिवासी क्षेत्रों में लगने वाले हाट बाजार देश को अर्थतंत्र की दृष्टि से सकारात्मक सहयोग दे सकते हैं। देश-विदेश में जहाँ एक ओर हस्त-शिल्प कला की वस्तुओं की माँग बढ़ रही है वहाँ आदिवासियों द्वारा बनाई गई प्राकृतिक वस्तुएँ एक बड़ा रोजगार केन्द्र बन सकती हैं।

वर्तमान समय में हस्त कला एवं शिल्प कलाएँ लुप्त हो रही हैं। बहुत कम कारीगर अब इस कला को जानते हैं। जिस कला से व्यक्ति को रोज़गार मिल सकता है उसे, यदि पाठ्यक्रम में शामिल किया जाय तो ऐसी कलाओं को लुप्त होने के कगार से रोका जा सकता है। साथ ही देश के प्रत्येक राज्य की हस्त कलाओं को नये जमाने की आवश्यकता के अनुरुप ढाला जाये तो यह एक विशिष्ट कला के साथ आर्थिक दृष्टि से भी उपयोगी हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. आदिवासी पहचान – डॉ. भगवानदास पटेल
२. गुजरात की आदिवासी संस्कृति का परिचय- सं. डॉ. महेशकुमार राठवा, डॉ. सुरेश पटेल